First Timothy: The Household of God

Dr. David Platt

October 16, 2011

सुसमाचार और भौतिकवाद – भाग 2

1 तीमुथियुस 6:17–19

मैं आपको आमंत्रित करना चाहूँगा कि आप मेरे साथ 1 तीमुथियुस 6 खोलें। हम 6वें पद से आरंभ करेंगे, और उसके बाद 17वें पद से होते हुए 19वें पद पर जाएंगे। स्टीव कॉबेट और ब्रायन फिकर्ट ने व्हेन हेल्पिंग हर्ट्स नाम से एक बहुत ही बढ़िया किताब लिखी है, जिसमें गरीबों की सहायता करने के बेहतरीन तरीकों के बारे में बताया गया है, और वे अपनी किताब का आरंभ कुछ इस तरह से करते हैं:

उत्तर अमेरीकावासियों के मनों पर बाइबल की शिक्षाओं का प्रभाव पड़ना चाहिए। हम, हर तरह से इस धरती के अब तक के सबसे समृद्ध लोग हैं। साथ ही, जितनी आर्थिक विषमता आज हमें देखने को मिलती है, वैसी शायद इतिहास में पहले कभी नहीं थी। जबकि एक औसत अमेरीकी की दैनिक आय 90 डॉलर के बराबर है, वहीं विश्व भर में लगभग 1 बिलियन लोग अपना गुज़ारा 1 डॉलर से भी कम की दैनिक आय में करते हैं। वहीं 2.6 बिलियन लोग (विश्व की सकल जनसंख्या का 40 प्रतिशत) 2 डॉलर की दैनिक आय पर गुज़ारा करते हैं।

अपने निष्कर्ष में, वे पूछते हैं, कि ''तो फिर कलीसिया का क्या काम है?'' उनका उत्तर है,

यीशु मसीह ने जो किया था, और हमारे द्वारा जो वह अब भी कर रहा है, उन कामों को करते हुए हमें उसे अपने भीतर साकार करना है। अपने कथनी और करनी का प्रयोग करते हुए, घोषणा करें, कि यीशु ही राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है, जो धर्मिकता, न्याय, और शांति के राज्य की स्थापना करनेवाला है। कलीसिया को यह काम उन्हीं लोगों के मध्य करना है जिनके मध्य यीशु ने किया था – वे जो अंधे हैं, लंगड़े हैं, बीमार हैं और बहिष्कृत और गरीब हैं।

विश्व की भौतिक गरीबी

लोग.....

यदि आप पिछले सप्ताह हमारे साथ नहीं थे, या कि आज ही आए हैं, तो मैं जल्दी से कुछ शब्दों में आपको बताना चाहूँगा कि हम किस विषय में बातचीत कर रहे हैं। हम विश्व की भौतिक गरीबी के विषय में बातें कर रहे हैं। मैं उसकी थोड़ी–बहुत वैज्ञानिक परिभाषा देना चाहूँगा। ज़रा सोचें कि विश्व में एक बिलियन से अधिक लोग एक डॉलर से भी कम की दैनिक आय में जीते हैं और भयंकर गरीबी में मर जाते हैं। एक बिलियन लोग! उस बिलियन में, लाखों बस्तियाँ, और शहरी क्षेत्र हैं जहाँ आस–पास हज़ारों लोग छोटी–छोटी झुग्गी–झोपड़ियोंवालियों में ठुसे पड़े हैं।

मेरे मन में मुंबई की धारावी बस्ती का विचार आता है, जहाँ मैं हाल ही में गया था। हमारी कलीसिया से लगे स्थानीय उपखंड की आधी जितनी जगह में बसी उस बस्ती में एक मिलियन से भी अधिक लोग रहते हैं। जिनमें से, लगभग हर पाँच में से एक व्यक्ति एचआईवी/एड्स से संक्रमित हैं, और लगभग एक लाख बच्चे लावारिसों की तरह अपना जीवन सड़कों पर बिताते हैं। लाखों–करोड़ों लोग गंदी बस्तियों में रहते हैं, और लाखो–करोंड़ों लोगों भूख से बेहाल हैं। हम कहते हैं, ''अरे मैं भूख से मरा जा रहा हूँ।'' नहीं, आप भूख से नहीं मर रहे हैं, लेकिन लाखों–करोड़ो लोग हैं, जो भूख से अवश्य ही मर रहे हैं। लाखों बच्चे शोषण का शिकार हो रहे हैं। अकसर बच्चे ही गरीबी का मूक शिकार बनते हैं। उनका शोषण किया जाता है, उनसे काम लिया जाता है, और दुर्व्यवहार करके उन्हें फेंक दिया जाता है। लाखों बच्चे न जाने कितने कारणों और परिस्थितियों के चलते अनाथ हो चुके हैं। ये बस आँकड़ें नहीं हैं। ये लोग हैं! ये लोग हैं, ये हमारी ही तरह के पुरुष, महिलाएँ, और बच्चे हैं।

गरीबी.....

यह भौतिक और आर्थिक गरीबी की तस्वीर है। यह तो भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, संबंधपरक और व्यक्तिगत गरीबी के गहन स्तर को छूती तक नहीं है। यह तो गरीबी का केवल भौतिक और सतही तस्वीर है। उनके लिए भौतिक गरीबी का अर्थ होता है भोजन और पानी का अभाव। धरती पर आज एक बिलियन से अधिक लोगों के पास पीने के लिए साफ पानी तक नहीं है। उनके पास शिक्षा के अवसर नहीं हैं। अफ्रीका और भारत जैसे देशो में असाक्षरता का रेट बहुत अधिक है। मामूली सी बीमारियों के लिए भी चिकित्सा का अभाव है। मैं यहाँ पर कोई बड़े–बड़े ऑपरेशनों की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं यहाँ पर बात कर रहा हूँ पेट की छोटी–मोटी बीमारियों की जिनके कारण लोगों की मौत हो जाती है....ऐसी बीमारियाँ जिनके लिए हम बस केमिस्ट से दवा लेकर बस कुछ ही घंटों में ठीक हो जाते हैं।

उनके दिमाग क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। विश्व में गरीबी की सबसे विनाशकारी तस्वीर है प्रोटीन की कमी से होनेवाली स्थायी दिमागी क्षति। जीवन के पहले दो वर्षों में हमारे दिमाग का 80 प्रतिशत विकास हो जाता है। यदि उस समय किसी को भरपूर मात्रा में प्रोटीन खाने को न मिले तो, अविकसित दिमाग के कारण होनेवाले नुकसान की भरपाई उसे जीवन भर करनी पड़ती है। इसे होने से रोका जा सकता है। एचआईवी/एड्स जिस तरह तेज़ी से फैल रही हैं उससे आसानी से बचा जा सकता है। फिर वहाँ पर ऐसे रोग और बीमारियाँ हैं जिनका उपचार आसानी से किया जा सकता है।

यह सच्चाई है। यदि आप किसी दिन बैठ कर इसके बारे में सोचेंगे, तो यह आपको भावाभिभूत कर देगा। यदि आपने इस बात पर ध्यान दिया हो तो जानेंगे कि हम रविवार में होनेवाले खेलों के कार्यक्रमों से हट कर अब उन चीज़ों की ओर अग्रसर हो चुके हैं जो वास्तव में कुछ मायने रखती हैं। हम उन बातों से आगे बढ़ चुके हैं जिनसे हमारी भावनाएँ जुड़ी हैं, और उन बातों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिनसे हमारी भावनाएँ जुड़ी होनी चाहिए। इन बातों पर गौर से विचार करने पर यह हमें झकझोर देते हैं। जब आपको इस बात का अहसास होता है कि जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं उसने व्यवस्थाविवरण 15 में कहा था कि उसके लोगों के मध्य कोई भी गरीब न रहे; वही परमेश्वर प्रेरितों 2 और 4 में एक ऐसे समुदाय का चित्रण करता है जहाँ कोई ज़रुरतमंद नहीं है; एक परमेश्वर जिसने पूरे नए नियम में अपने लोगों को ऐसे लोगों की मदद के लिए एकत्रित किया जो भुखमरी से जूझ रहे थे; इस पुस्तक के आरंभ से लेकर अंत तक, वह परमेश्वर यही चाहता है कि उसका अनुग्रह और उसकी कृपा संसार के ज़रुरतमंद लोगों के बीच प्रकट हो।

कलीसिया में भौतिक समृद्धि.....

जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं, वह हमें कलीसिया में निहित समृद्धि की समझ देता है। 1 तीमुथियुस 6:6–10 में पलूस कहता है,

"पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की

जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटक कर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।''

बड़ी कमाई का मार्ग.....

चलिए देखें कि 1 तीमुथियुस 6 में परमेश्वर हमसे क्या कहना चाहता है। संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। अपनी बुनियादी ज़रुरतों के पूरे होने का संतोष रखो। पौलुस कहता है कि *''खाने और पहनने''* भर से संतोष रखो। जीवन की बुनियादी ज़रुरतों के पूरा होने भर से संतोष रखो। मसीहियों को जीवन की साधारण ज़रुरतों के पूरा होने भर से संतुष्ट होना चाहिए, और वे हो सकते हैं। क्या आप इतने भर से संतुष्ट हैं? मेरे शहरी भाइयों और बहनों, क्या आप सचमुच इतने भर से संतुष्ट हैं? बाइबल हमें बुनियादी ज़रुरतों के पूरा होने भर से संतुष्ट होने और भौतिक चीज़ों की अधिकता के बारे में चेताती है। पूरी तरह सचेत रहें! पौलुस कहता है कि अधिक पाने की लालसा खतरनाक और व्यर्थ है। इसलिए, भौतिकवाद हानिकारक ही नहीं, अपितु मूर्खतापूर्ण भी होता है।

ज़रा इस पर विचार करें। भौतिकवाद क्या करता है? हम इसमें से कुछ भी साथ नहीं ले सकते हैं! पौलुस कहता है, ''हम इस जगत में खाली हाथ आए थे, और इस संसार से खाली हाथ ही जाएंगे।'' शव–वाहन के पीछे सामान को साथ ले जाने का खूँटा नहीं होता। आप अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकते हैं। ये बातें आपके संतोष को चूस लेंगी। आप जितना अधिक बटोरेंगे, उतना ही अधिक स्वयं को इस बात का भरोसा दिलाएंगे कि आपको उसकी ज़रुरत थी, और इसलिए फिर और अधिक बटोरने की लालसा करेंगे, और इस तरह ये आपको परमेश्वर में मिलनेवाले संतोष से रहित कर देगा।

आप कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाएंगे, लेकिन ये चीज़ें आपके संतोष को हर लेंगीं, और आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को खो देंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर ने आपको सबसे अधिक समृद्धि किसी उद्देश्य के लिए दी हो, न कि अपनी आत्म तुष्टि के लिए? कहीं ऐसा तो नहीं कि वास्तव में जगत के सभी लोगों के मध्य अपनी महानता को प्रकट करने के लिए परमेश्वर ने आपको समृद्ध बनाया हो? ऐसे हज़ारों समुदाय हैं जिन्होंने अब तक परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं सुना है। परमेश्वर आपके जीवन से क्या चाहता है? उन्हें सुसमाचार देना या अपने लिए एक और मकान खरीदना? हम इस पर दोबारा विचार करेंगे।

संपूर्ण विनाश का मार्ग.....

वही है कमाई का मार्ग। केवल कमाई का नहीं, वरन् बड़ी कमाई का मार्ग। अपने जीवन की बुनियादी ज़रुरतों के पूरा होने भर से संतोष रखो। बाइबल हमें अपने लिए साधन जुटाते रहने के प्रति सचेत करती है। लेकिन सेचत क्यों रहना चाहिए? क्योंकि यह संपूर्ण विनाश का मार्ग है। 9वें और 10वें पद में पौलुस दो बातों के संदर्भ में कहता है। 10वें पद में, पैसों के प्रेम, और 9वें पद में धनी होने की इच्छा के बारे में कहता है। वास्तव में यह एक ही बात को कहने के दो तरीके हैं, और वह कहता है कि दोनों ही बातें मुनष्य को विनाश के समुद्र में डुबो देती हैं। भौतिकवाद आपको ध्वंस और विनाश की ओर ले जाता है। देखा आपने! परमेश्वर हमें यहाँ पर भौतिकवाद के प्रति सचेत करता है! मैं जानता हूँ कि यह आजकल के प्रचलित संदेशों के बिल्कुल विपरीत बात लगती है, लेकिन यह सब बातें हमारी ही भलाई के लिए कही गई हैं! चलिए उस पर विश्वास करते हैं! यह हमें अपने ही विनाश और अपनी ही विकृति की ओर ले जाती है। 10वें पद में बहुत ही चौंकानेवाली भाषा का प्रयोग हुआ है। *''अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।''* भौतिकवाद से दूर भागें। हमारे शहर में हर तरफ बिछे इस फंदे से दूर भाग जायें। इससे दूर भागें! यह वह मार्ग है जो अनन्त विनाश की ओर ले जाता है।

आप कहते हैं, ''तो फिर अपनी समृद्धि का हम क्या करें?'' मुझे खुशी है कि आपने यह सवाल उठाया। 17वें से 19वें पद में परमेश्वर कहता है,

> *''इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों। और आगे के लिये एक अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें।''*

धनवानों के लिए योजना.....

धनवानों के लिए योजना: वे सभी जो कि धनवान हैं, जैसे कि हमारे लिए, अभिमान न रखें। 17वाँ पद कहता है कि ''....वे अभिमानी न हों।'' संपत्ति अभिमान को जन्म देती है। इसे रेखांकित कर लें। हम सोचते हैं, 'नहीं! ऐसा नहीं होता।'' हम ऐसा अपने अभिमान के कारण सोचते हैं! हम सोचते हैं, ''मेरे पास जो चीज़ें हैं, उन्हीं के कारण मैं सही सलामत हूँ। इन चीज़ों के कारण मैं सुरक्षित महसूस करता हूँ।'' अब, देखिये, हम ऐसा नहीं कहते कि ''ये चीज़ें मुझे सुरक्षा देती हैं,'' लेकिन यदि कोई हमसे कहे कि अपनी चीज़ें दूसरे देशों के लिए दे दो, तो तुरंत हमारे भीतर असुरक्षा की भावना जाग जाएगी।

अभिमान से दूर भागें, और स्वार्थ से दूर भागें। चंचल न पर आशा न रखें! धन के कारण आप स्वयं पर और अपने द्वारा अर्जित संपत्ति पर आशा रखते हैं। आप सोचने लगते हैं, ''मैं बिल्कुल भला–चंगा हूँ। देखों मैं क्या कुछ कमा और कर सकता हूँ!'' नहीं! इस तरह की सोंच आपको मार डालेगी; और साथ ही, यह दूसरों को भी मार डालेगी, क्योंकि इसके कारण आप केवल अपने लिए अधिक से अधिक चीज़ें बटोरने में अपने संसाधन लगाएंगे न कि धरती के छोर तक मसीह की महिमा को प्रकट करने में। इसलिए, अभिमान और स्वार्थ से कोसो दूर भागें, और बजाय इसके, अपनी आशा परमेश्वर में रखें और उसे ही अपने ध्यान का केंद्र बनायें। दूसरे शब्दों में कहें, 1 तीमुथियुस 6 हमें प्रेरित करता है कि हम दान में नहीं, वरन् दाता में आनन्दित रहें!

अपने मन और अपनी बुद्धि को दाता पर केंद्रित करें, न कि उसके दिए दानों पर! परमेश्वर पर केंद्रित रहें! हमारे आनन्द के लिए वही सब चीज़ों का देनेवाला है। 17वें पद का केंद्रीय भाव यही है। हमारे भीतर और हमारे लिए दिए वरदान बुरे नहीं हैं। वे परमेश्वर के दिए वरदान हैं जो हमारे आनन्द के लिए वह हमें देता है, और उन अच्छे वरदानों के साथ, हमे अच्छी बातें करनी चाहिए। *''.....भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों।''* अच्छी चीज़े हम दूसरों की भलाई के लिए देते हैं। देने में उदारता बरतें। भौतिकवाद का प्रतिकार करने के लिए बाइबल हमें उदारतापूर्ण व बलिदानपूर्ण दान करने को कहती है। इसलिए, दूसरों के सुखों के लिए भली वस्तुएँ दान में दो, और ऐसा करने के दौरान, आप अपनी और दूसरों की अनन्तता में भली वस्तुओं का निवेश करेंगे। ऐसा देने के कारण होगा, न कि अपने लिए संग्रह करने से; बलिदानपूर्वक दान से, न कि जमाखोरी से। ऐसा करने से हम अपने भविष्य के लिए एक अच्छी बुनियाद डाल पाते हैं, ताकि हम उसे पा सकें जो कि वास्तव में जीवन है। तो यह थी इन पदों की व्याख्या।

एक उदाहरण.....

अब, यह रहा इन पदों के लिए एक उदाहरण। यह केवल एक उदाहरण है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह एकलौता उदाहरण नहीं है। परमेश्वर की योजना के अनुसार हमारे जीवन की हर परिस्थिति में, वचन बहुत ही आश्चर्यजनक रीति से रचनात्मकता के साथ जीवंत होते हैं, लेकिन मैं आपके सामने 1 तीमुथियुस 6 में दी एक तस्वीर पेश करना चाहता हूँ।

केटी डेविस के बारे में सबसे पहले मैंने तब सुना था जब एक कलीसिया के रुप में हम *रैडिकल* नामक उपदेशों की श्रंखला कर रहे थे। सुसमाचारों में दिए प्रभु यीशु के कठोर किंतु तुष्ट करनेवाले शब्दों ने हमें

रास्ता दिखाया कि हम उसमें अपने जीवन के खज़ाने को खोजें, और चीज़ों, सुख–विलासों की खोज, और इस दुनिया के धन–धान्य के लिए मर जायें। केटी यूगांडा, अफ्रीका में रहती थी, और वह वचन की हमारी इस यात्रा को सुनने लगी। इसके बाद, अपने ब्लॉग के माध्यम से उसने दूसरों को भी इसके बारे में बताया। इस तरह, एक अद्‌भुत रीति से आज हमारे पास उसके जीवन के वचन से प्रोत्साहन पाने का अवसर है। वह मसीह में हमारी एक बहन है, और उनसे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं कि वचन को कैसे जीवन में उतारा जाता है। भाइयों और बहनों, क्या आप मेरे साथ मिलकर, विश्वास के इस परिवार में केटी का स्वागत करेंगे?

केटी के साथ समय बिताने के द्वारा, और जो कुछ भी उसने लिखा है, उसके चेहरे से, और जिस शालीनता के साथ वह रहती हैं, इन सब बातों से बस यही पता चलता है कि अपने जीवन में मसीह को उठाया जाये। केटी से कहीं अधिक, यह मसीह की कहानी है।

डेविड : केटी, मैं चाहूँगा कि आप अपने भीतर मसीह की एक हल्की सी छवि के बारे में बतायें। चलिए आरंभ बिल्कुल शुरुआत से, यूगांडा की एक छोटी सी यात्रा से करते हैं। हमें बतायें कि उसकी योजना कैसे बनी और उस यात्रा में सब कुछ कैसा रहा?

केटी : मेरे मन में यूगांडा का कोई ध्येय नहीं था। मैं तो किसी भी देश में जाकर सहायता करना चाहती थी। जिस शहर से मैं हूँ, वहाँ एक स्वयंसेविका के रुप में पहले भी बहुत सा कार्य कर चुकी हूँ, और मैं देखना चाहती थी कि तीसरे विश्व के किसी देश में जाकर सेवा करना कैसा रहेगा। मैं ऑनलाईन जाकर बहुत से अनाथालयों में आवेदन करने लगी, जिसमें कि यूगांडा भी शामिल था। वहाँ के निदेशक ने बहुत ही मधुरता और कोमलता के साथ मुझे उत्तर दिया ''हाँ, हमें एक स्वयंसेवक की ज़रुरत है।'' पहले कुछ महीनें, मैं अपनी माँ को अपनी इस यात्रा में साथ चलने के लिए मनाती रही।

हाई स्कूल में क्रिसमय की छुट्टियों के दौरान, हम तीन सप्ताह के लिए वहाँ गये। वहाँ जाते ही मुझे उस देश और वहाँ के लोगों से प्यार हो गया। मैं वहाँ की ज़रुरत को देख कर भावविभोर हो गई, ऐसी गरीबी का अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था। मुझे यीशु से और अधिक प्रेम हो गया, और मैं उसके वचन का सशब्द अनुकरण करना चाहती थी। अमेरीका की धरती पर कदम रखते ही मैं जान गई थी कि मुझे वहाँ दोबारा लौटना होगा। इस ज़रुरत के प्रति उसने मेरी आँखें खोल दी थीं, और मुझे नहीं पता था कि इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए, लेकिन मैं इतना अवश्य जानती थी कि कुछ न कुछ तो मुझे करना ही है।

डेविड : इस तरह, आपको लगा कि यूगांडा के लिए तीन महीने काफी नहीं हैं, और शायद वहाँ पर एक साल बिताना चाहिए। इसके बाद, आप संयुक्त राष्ट्र में वापिस आ कर अपने सामान्य जीवन में लौट जायेंगो। लेकिन इसके बाद, आप एक शिक्षिका के रुप में एक साल के लिए वहाँ लौट जाती हैं। हमें ज़रा इसके बारे में कुछ बतायें।

केटी : बिल्कुल ठीक कहा आपने। मैंने बिल्कुल ऐसा ही सोचा था। यूगांडा में मेरी मुलाकात एक पास्टर से हुई जो वहाँ अनाथालय के लिए एक स्कूल खोलना चाहते थे। अनाथालय के बच्चों को बाहर स्कूल में भेजने के लिए उन्हें बहुत से पैसे खर्च करने पड़ रहे थे। वह शुरुआत केजी के साथ करना चाहते थे। पिछले कुछ सालों में, धीरे–धीरे उस स्कूल में और अधिक कक्षाएँ जुड़ गई थीं। उन्होंने कहा, ''यदि तुम आकर स्कूल के बुनियादी ढाँचे और कक्षा की रुप–रेखा को विकसित करने में मदद करोगी, तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।'' मैने उनसे कहा, ''मैंने कभी नहीं पढ़ाया।'' वे बोले, ''परमेश्वर ने ही यह बात मेरे मन में डाली है कि मैं तुमसे वापिस आकर पढ़ाने की बात कहूँ।''

जैसा कि मैने कहा था, कि अमेरीका लौटते ही, मैंने सोचा, ''ठीक है, लौटने के लिए जो कुछ भी करने को तू कहेगा, मैं वह सब करुंगी!'' इसलिए, हाई स्कूल समाप्त करने के बाद मैं जहाज़ में बैठ गई। मैने सोचा, ''इस साल मैं अवकाश लेकर, बस मिशन करुँगी।'' मेरे विचार से मेरे माता–पिता सोच रहे थे, ''इसके बाद मेरा मन भर जाएगा।'' हम सब यही सोचते थे कि मैं लौट आऊँगी, कॉलेज जाऊँगी और एक सामान्य जीवन में लौट जाऊँगी। मैं यूगांडा लौट गई, जो कि बहुत ही तकलीफदेह था। मैं वहाँ पर जाकर खुश थी, और मुझे वहाँ के लोगों से प्यार था, लेकिन एक अच्छे से उपनगरीय समाज से होने के कारण, जो कि बहुत कुछ आपके समुदाय जैसा है, मुझे बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ रहा था।

मुझे वह सुबह याद है जब मैं उस बाड़े जैसी जगह में पहली बार गई थी। उन लोगों ने उसे कक्षा में बदल दिया था, और वह बहुत ही छोटी सी जगह थी, लेकिन उसमें 140 बच्चे, एक दूसरे से सट कर बैठे हुए थे। उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी। उनमें से अधिकांश बच्चों ने कभी किसी गोरी महिला को नहीं देखा था। उनमें से कुछेक ने शायद किसी गोरे व्यक्ति को देखा हो, लेकिन बातचीत कभी नहीं की थी। तो, मैं उस बाड़ेवाली कक्षा के सामने जाकर खड़ी होती हूँ, और कहती हूँ, ''हेलो!'' उनकी छोटी–छोटी आँखें मानो बाहर ही निकल आई थीं! मैंने पूछा, ''आप कैसे हो?'' कि तभी कोने में बैठा एक बच्चा रोने लगा। मैंने सोचा, ''ओह, नहीं।''

डेविड : क्या हमारे बीच कोई ऐसा है जिसकी कक्षा में 140 बच्चे हों, और वे भी जो आपकी भाषा न समझते हों? क्या किसी को ऐसा अनुभव हुआ है? मेरे विचार से, केटी, केवल आपने ऐसा किया है। बहुत ही जबरदस्त!

केटी : बिल्कुल सही, यह बहुत ही जबरदस्त है। मुझे वहाँ पर उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान देना था क्योंकि यूगांडा के बाकी स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ाई जाती है। मेरी सुबह, उस बाड़ेवाली कक्षा के आगे एक गेंद को पकड़े बीतती, और मैं कहती, ''यह एक गेंद है।'' वे सब दोहराते ''यह एक गेंद है।'' इसके बाद मैं पेंसिल पकड़ कर कहती, ''यह एक पेंसिल है।'' वे सब दोहराते ''यह एक पेंसिल है।'' यही बात हम बहुत सी अन्य चीज़ों के साथ भी करते। लेकिन हमेशा ऐसा होता, कि अंत में कोई बच्चा पेंसिल लिए मेरे पास आता और कहता ''यह एक गेंद है।''

डेविडः कम से कम वह आधा वाक्य तो सही बोल रहे थे। तो यह अच्छी बात है। वे सीख रहे थे।

केटी : ठीक। लेकिन इन पलों में मैं सोचती, ''लगता है कि परमेश्वर आपने किसी गलत व्यक्ति को काम पर लगा दिया है। मुझे माफ कर दें।'' अगले कुछ सप्ताहों के दौरान हमें कुछ स्थानीय शिक्षक और अनुवादक मिल गए जो मेरे साथ पढ़ाने में मदद करने लगे। हमने बच्चों को तीस–तीस के छोटे समूहों में बाँट दिया, और हमने अनाथालय के बाहर, पेड़ों के नीचे कक्षाएँ दीं। इससे उनमें बहुत सुधार आया।

डेविड : इस बीच, परमेश्वर ने आपके मन में यूगांडा के बच्चों की शिक्षा को लेकर बोझ डाला, जिसके बहुत से अद्‌भुत परिणाम रहे हैं। तो, ज़रा हमें बतायें कि शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं? आपके मन में शिक्षा को लेकर इतना बोझ क्यों हैं, और यह क्या रंग लेकर आया?

केटी : ठीक है। वहाँ पढ़ाते समय मुझे दो तरह की ज़रुरतों का अहसास हुआ। मैंने देखा कि एक–दो बच्चे बीच–बीच में एक या दो सप्ताहों के लिए अचानक स्कूल आना बंद कर देते थे। अपने अनुवादक, ऑलीवर से मेरी मित्रता गहरी होने लगी थी। वह उसी समुदाय से है और समुदाय के बहुत से लोगों से उसकी अच्छी जान–पहचान है। मैं उससे पूछती, ''क्या हम उस बच्चे से मिलने जा सकते हैं? क्या हम चल कर देखें कि वह स्कूल क्यों नहीं आया/आई?''

समस्या यह थी कि उनमें से बहुत से बच्चों कि या तो केवल माँ थी या केवल पिता, और बहुत से तो पूरी तरह अनाथ थे और अपने दादा–दादी/नाना–नानी, या अंकल, या आंटी, या किसी रिश्तेदार के साथ रहते थे जो सचमुच उनकी देखभाल तो करना चाहते थे, लेकिन गरीबी के कारण दो वक्त का भोजन जुटाने और अनाथालय के मामूली शुल्क को भी देने के लिए उन्हें जूझना पड़ रहा था। फिर मैंने ऐसे माता–पिता भी देखे, जो अपने बच्चों से बहुत अधिक प्रेम करते थे। उनके बच्चे अनाथ नहीं थे। लेकिन वे उन्हें अनाथालय में ला रहे थे, क्योंकि वहाँ रहने पर उन्हें तीन समय का भोजन मिलता, उन्हें चिकित्सा मिलती, और वे स्कूल में पढ़ पाते। इसलिए, ये लोग, यह जानते–समझते हुए कि ये सारी चीज़ें वे अपने बच्चों को नहीं दे सकते हैं, उन्हें पहले से भरे हुए अनाथालय में छोड़ गए थे।

तो, मैंने कहा, ''ऐसा कोई माध्यम अवश्य ही होगा जिसके द्वारा अपने माता–पिता के साथ रहते हुए भी, इन बच्चों की बुनियादी ज़रुरतों को पूरा किया जा सके।'' माता–पिता और अभिभावक अपने बच्चों को किसी भी तरह शिक्षित करना चाहते हैं, क्योंकि उनमें से बहुत से स्वयं अशिक्षित हैं और इसके कारण उन्हें कोई नौकरी नहीं मिल पाई है। नौकरी न होने के कारण, वे अपने बच्चों को पालने में असमर्थ हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़े–लिखें और एक बेहतर जीवन जीएँ। इसलिए, मैंने अपने माता–पिता को फोन किया और अपने दोस्तों को ईमेल किया, कि ''क्या आप एक छोटी सी रकम दान में दे सकते हैं, मैं इसका प्रयोग फलाने बच्चे के भोजन पर करुँगी या कि मैं इसका प्रयोग फलाने बच्चे को स्कूल वापिस लाने में करुँगी। इसके कारण, एक परिवार को साथ में रहने का सुख मिल सकेगा।'' इसके बाद, 10 से 40 हुए, और 40 से 100, और जिस अमेज़ीना मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई मैं चलाती हूँ, उसका जन्म हुआ।

डेविड : तो, इस तरह, पढ़ाने–लिखाने के दौरान, परमेश्वर ने आपको एक शिक्षिका से एक माँ के रुप में बदल दिया, जिसकी शायद आपको कोई उम्मीद नहीं थी। हमें ज़रा एग्नस के बारे में बतायें।

केटी : यह जानने से पहले कि गोद लेना किसे कहते हैं, यह मेरी दुनिया में प्रवेश कर चुका था। यह जनवरी का महीना था। अमेज़ीना की स्थापना हो चुकी थी, और वह तेज़ी से फलने–फूलने लगी थी, और हमे कार्यालय बनाने के लिए एक जगह की ज़रुरत थी, ताकि हम यूगांडा, और साथ ही अमेरीका की सरकार के अंतर्गत एक लाभ–निरपेक्ष संस्था (नॉन प्रोफिट) के रुप में पंजीकरण करा सकें। मैं एक कमरेवाले, छोटे से घर की तलाश में लगी थी। अनाथालय में मैं एक कमरे के मकान में रहती थी, और वह मेरे लिए बहुत था। यह यूगांडा था, तो किराये पर चढ़ाने के लिए शायद तीन मकान थे। लेकिन हर बार मेरा मन उस मकान की ओर जाता, जो बड़ा था, उसमें सोने के लिए चार कमरे थे, और एक छोटी सी

रसोई थी। मैं कहती रहती, ''अरे नहीं, यह मेरे लिए तो यह बहुत बड़ा है।'' मकान–मालिक ने किराया भी घटा दिया, लेकिन मैं कहती ''आप बहुत अच्छे हैं, लेकिन यह सचमुच मेरे लिए बहुत बड़ा है।'' मुझे सचमुच लगा कि जैसे परमेश्वर मुझे कह रहा था, ''यह तुम्हारा घर है।'' मैंने सोचा, ''नहीं! नहीं, यह नहीं हैं! यह तो बहुत बड़ा है!'' लेकिन मकान मालिक किराया घटाता रहा, और ऐसे में किसी छोटे से कमरे में रहने का कोई तुक नहीं रह गया था क्योंकि छोटे से कमरे का भी किराया उतना ही था जितना की इसका। इसलिए, मैंने उसे किराये पर ले लिया।

बस कुछ ही सप्ताह बाद, सड़क के उस पार एक घर गिर गया। वह नौ साल की एग्नस के ऊपर आ गिरा। ऑलीवर ने मुझसे कहा, ''एक छोटी सी लड़की है। वह उस ईटों की दीवार के नीचे थी। हमें जाकर उसके लिए प्रार्थना करनी है।'' उसे अस्पताल ले जाया गया था, तो हम वहाँ पहुँचें, और हमने उसे अस्पताल के बिस्जर पर लेटा देखा। किसी ने उसे किसी प्रकार की कोई चिकित्सा नहीं दी थी, क्योंकि अस्पताल को उसके माता–पिता या अभिभावक नहीं मिल पाया था जो उसकी चिकित्सा के पैसे देता। उन्होंने उसे वहाँ पर पड़े रहने दिया, लेकिन उसका कोई उपचार नहीं किया था। मैंने कहा, ''आपको जो कुछ भी इसके लिए करना है वह कीजिए, पैसों का प्रबंध मैं देखती हूँ।''

वे ऑलीवर से पूछने लगे, ''इसके माता–पिता या अभिभावक कहाँ हैं? इसकी देखभाल के लिए कोई क्यों नहीं आया है?'' उसने बताया कि कुछ सालों पहले उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। नौ साल की आयु में एग्नस और उसकी सात और पाँच साल की बहनें, मेरी और स्कोविया, इस घर में साथ–साथ रह रहे थे।'' मैंने सोचा, ''सवाल ही नहीं उठता! उनके लिए कौन भोजन पकाता है, और कौन उनकी देखभाल करता है?'' वह कहती रही कि वे स्वयं एक दूसरे की देखभाल करते हैं। वे अकेले ही इस घर में रह रहे थे। मैने सोचा, ''अब तो वे सात और पाँच साल की बच्चियाँ, न केवल अपनी बड़ी बहन की देखभाल के बिना रह गई हैं, बल्कि अब तो उनका कोई घर भी नहीं रहा, क्योंकि घर तो ढह चुका है।'' मैंने बस सोचा, ''तुम्हारे पास घर नहीं है, मेरे पास है। तुम लोग मेरे पास आकर रहो, और मैं देखती हूँ कि आगे क्या करना है।''

मैंने बच्चों को आर्थिक संरक्षण देने के विषय में सुन रखा था। मैं ऐसे किसी परिवार की तलाश करने लगी जो इन बच्चों को गोद ले सके और साथ ही सोचने लगी, कि ''हम उनके लिए आर्थिक संरक्षक खोजेंगे, और फिर देखते हैं क्या करना है।'' कई सप्ताओं की खोज के बावजूद हम उनके समुदाय से ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं खोज पाए जो उनके परिवार से जुड़ा हो और बच्चों की देखरेख करना चाहता हो।

परमेश्वर मुझे प्रार्थना में इस बात की पुष्टि करता रहा कि ''जिस परिवार की तुम खोज कर रही हो, वह तुम स्वयं हो।'' उसी समय, सबसे छोटी स्कोविया, मुझे माँ कह कर पुकारने लगी। हम लोग साथ में बढ़ रहे थे, और जाने–अनजाने ही हम एक परिवार बन गये थे। और इस तरह, उनके देखरेख की प्रक्रिया शुरु हो गई, और एक दिन मैंने उन्हें औपचारिक रुप से गोद ले लिया।

डेविड : तो, वे थीं एग्नस, मेरी और स्कोवा। इसके बाद आईं प्रोसी और मारग्रेट, और फिर सर्माइन, फिर जॉयस, और उसके बाद साराह। इस तरह, घर पर सदस्यों की गिनती का हिसाब रखनेवालों के लिए, एक साल में आठ बच्चे। ये तो बहुत अधिक हैं। इस तरह, यूगांडा में बिताया एक साल; बस एक साधारण सा साल। आप अमेरीका लौटीं, लेकिन आप जानती थीं कि आपका मन वहीं यूगांडा में है। ज़रा हमें इसके बारे में बतायें। आपने कहा था, ''ठीक है, इस साल के पूरा होने के बाद मैं वापिस आ जाऊँगी,'' लेकिन स्पष्ट है, उन लड़कियों के साथ, और सेवकाई के कारण आपकी योजना बदल गई। हमें ज़रा उस संघर्ष के बारे में बतायें जिसका आपने यहाँ लौटने के बाद अनुभव किया।

केटी : मैं बुरी तरह टूट चुकी थी। अब भी, उसके बारे में सोचना बहुत मुश्किल है। बहुत ही मुश्किल! लेकिन परमेश्वर स्पष्ट रुप से कहता है, ''अपने माता–पिता का आदर करो।'' मैंने अपने माता–पिता को वचन दिया था कि मैं लौट आऊँगी। मुझे लगा भी था कि मुझे लौट जाना चाहिए, लेकिन साथ ही लगता था कि लौटने का निर्णय सही नहीं होगा। यूगांडा में जो कुछ भी परमेश्वर मेरे जीवन के साथ कर रहा था, वह बहुत प्रत्यक्ष था। वह सब इतना प्रत्यक्ष था कि मुझे यह बात अच्छी तरह से मालूम थी कि यूगांडा में मैं एक साल नहीं, बल्कि जीवन भर के लिए आई हूँ। इसलिए, मैं लौटी, और मैं बहुत तकलीफ में थी। मुझे लगा कि मेरे जीवन में जो कार्य परमेश्वर कर रहा है, उससे मैं पूरी तरह अलग हो जाऊँ; वह बहुत ही भयानक अहसास था! ऐसा कभी न करें! यदि परमेश्वर आपसे कुछ करने को कह रहा है, तो बस उसे कर डालें!

इस दुनिया में लौटना बहुत ही मुश्किल काम था। पहले साल, मेरे पास दो प्रकार के भोजन का विकल्प था। आप अमेरीका के किसी भी जनरल स्टोर में चले जाएँ, और आपको अपने कुत्ते के लिए भी बारह तरह के आहार मिल जाएंगे। मैं सोचती हूँ कि यूगांडा में परमेश्वर ने मेरी बहुत सी भौतिक चीज़ों को दूर किया है, यहाँ तक कि संबंध भी। उसने पूरी विश्वासयोग्यता के साथ यूगांडा में मुझे नए संबंध और नए लोग दिए हैं, लेकिन उन दिनों, मैं बहुत अकेली थी। मुझे सहारा देने के लिए कोई नहीं था, लेकिन उसके ऐसा करने के कारण मैं उसके बहुत करीब हो गई, बहुत–बहुत करीब! मेरे पास परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई

सहारा नहीं था! उसके साथ मेरा संबंध इतना गहरा हो गया था कि मेरे लिए यहाँ पर लौटना बहुत मुश्किल था, और यहाँ पर बहुत सी ध्यान भटकानेवाली बातें थीं। मुझे याद है कि एक बार मैंने लिखा था कि मैं यदि चाहूँ तो परमेश्वर के भरोसे रहना छोड़ सकती हूँ क्योंकि मेरे पास बहुत कुछ था! तो, अनजाने में ऐसा कर देती, और वह भयावह रुप से बहुत ही कष्टदायी होता था।

डेविड : तो, आपने यूगांडा की एक–तरफा यात्रा की, और हेलेन, जेन, ज़्यूला, तबीता, ग्रेस और फिर पेट्रिशिया भी साथ में आ गईं। बताना चाहूँगा, कि इस तरह 14 लड़कियाँ हो गई थीं, लेकिन यह यात्रा भी दिल दुखानेवाले अनुभवों से रहित नहीं थी। तो, हमें जेन के बारे में बतायें।

केटी : जेन को उसके जन्म देनेवाले माता–पिता ने त्याग दिया था। उस समय वह तीन महीने की थी। परिवार के बाकी लोग उसके लिए कुछ करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन कर नहीं पा रहे थे। रिश्तेदारों में सभी के अपने ही बहुत बच्चे थे, और उन्हीं की परवरिश करना उनके लिए दूभर था। इसलिए, जेन को एक परिवार से दूसरे परिवार में भेजा जाता रहा। वह डेढ़ या दो साल की थी जब मैं उसे धूल भरे रास्तों पर भटकता देखती थी। मैं उसे भोजन के लिए बुलाती, और वह, वहीं फर्श पर ही सो जाती, और हमारे घर में थोड़ी झपकी ले लेती। इसके बाद, मैं उसे उसके घर छोड़ कर आती। कई बार किसी भी अभिभावक या वयस्क को न पाकर मैं उसे अपने ही घर पर सुला देती थी।

इस तरह, मैंने उसकी एक आंटी से बातचीत की और उससे पूछा, ''क्या इस बच्ची की देखभाल के लिए कोई है? यदि कोई नहीं है, तो मैं उसकी देखभाल करने को तैयार हूँ।'' मैंने उसका पोषक बनने की प्रक्रिया शुरु कर दी। मैंने पुलिस में रिर्पोट लिखवाई और अखबार में उसके माता–पिता की तलाश में एक विज्ञापन छपवाया, लेकिन कोई नहीं आया।
यूगांडा में, गोद लेने से पहले तीन साल तक बच्चे का पोषक बनना होता है, और साथ ही आपको 25 साल की आयु का होना चाहिए। हम उसकी प्रतिक्षा कर रहे हैं।

लगभग ढाई सालों तक उसकी देखभाल करने के बाद, एक दिन, एक औरत मेरे दरवाज़े पर आई। उसका नाम नैंसी था। उसने मुझसे कहा कि वही जेन को जन्म देनेवाली माँ है, और उसे अपनी बच्ची वापिस चाहिए। ''कैसे? तुम कहाँ से आई हो? मेरा पता तुम्हें किसने दिया?'' दरअसल में यह साबित करने के लिए कि जेन उसीकी बेटी है, उसके पास जेन का जन्म प्रमाणपत्र था। यूगांडा के जिन लोगों को मैं जानती हूँ, उनमें से अधिकांशों के पास कोई जन्म प्रमाणपत्र नहीं था। मैंने एक सामाजिक कार्यकर्ता को बुलाया जो

सरकार के लिए काम करता था, और मेरे अधिकांश बच्चों को उसी ने मेरे हवाले किया था। मैने उससे पूछा, ''मैं क्या करुँ?'' वह बोला, ''यदि आप चाहें तो अदालत का दरवाज़ा खटखटा सकती हैं।'' हमने ऐसा ही किया, और उसकी जन्म देनेवाली माँ को उसकी कस्टडी दे दी गइ। वह बहुत ही कठिन समय था! मेरा दिल टूट गया था। मुझे लगा मैने अपना बच्चा खो दिया है। पहले कई महीने वे हमसे लगभग 5 घंटे की दूरी पर रहे। यह पिछले अक्टूबर की बात थी। इस बात को लगभग एक साल होने का आया था।

फिर अप्रैल या मई में, एक बार फिर से जेन को लिए नैंसी मेरे दरवाज़े पर खड़ी थी। उसने कहा, ''मेरी नौकरी चली गई है। मुझे अपने घर से निकाल दिया गया है। मेरे पास सिर छिपाने की कोई जगह नहीं है। मुझे नहीं पता मैं इस बच्ची की देखभाल कैसे करुँगी।'' इस तरह, हमने अपने दरवाज़े थोड़े और खोल दिए, और नैंसी व जेन, दोनो कुछ समय तक हमारे साथ रहने के लिए आ गए। उसके बाद हम नैंसी के लिए नौकरी ढूँढ पाए। वह अमेज़ीना के लिए कार्य करती है और हमारे लिए अनुवाद करती है, और वह और जेन, आगे सड़क में नीचे की तरफ रहती हैं। परमेश्वर के उद्धार के कार्य के इतने रुपों को देखना बहुत ही अद्‌भुत होता है। मैं अपना सारा जीवन इस बात की वकालत करने की कोशिश में बिताती हूँ कि बच्चों को अपने जन्म देनेवाले माता–पिता के साथ ही रहना चाहिए। आर्थिक संरक्षण देने के पीछे यही उद्‌देश्य है। मुझे बच्चों को गोद लेना बहुत अच्छा लगता है, और अपने बच्चों की माँ होने से मैं बहुत खुश हूँ और खुद को सौभाग्यशाली मानती हूँ। मैं यह भी समझती हूँ कि गोद लिए जाने की स्थिति में पहुँचना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण होता है। मेरे विचार से, ऐसी स्थिति में गोद लिये जाने के द्वारा परमेश्वर उनका उद्धार करता है। जेन के मामले में, परमेश्वर ने नैंसी को वापिस ला कर उनके संबंधों का उद्धार किया। उसने मुझसे बातचीत की, और कहा ''मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि केवल जेन को परिवार मिले; मैं चाहता था कि नैंसी को भी परिवार मिले। मैं नहीं चाहता कि केवल जेन मुझे जानें, मैं चाहता हूँ कि नैंसी भी मुझे जाने।'' तो, अब हम सहेलियाँ हैं। वे पास ही में हैं, और अच्छे से हैं।

डेविड : वाह! तेरह बच्चियाँ घर में, और न जाने कौन–कौने से लोग लगातार आपके दरवाज़ें पर, आपके घर पर। इसमें स्त्री भी हैं और पुरुष भी, बीमार लोग, और बेघर लोग। ज़रा हमें बतायें कि किसी तरह के लोग आपके घर में आते रहते हैं।

केटी : ठीक है। समुदाय के लोग और स्टाफ के सदस्य मेरे घर को बड़ा सा ''रेलवे स्टेशन'' कहते हैं। कोई नहीं कह सकता कि किसे वहाँ पर कौन मिल जायेः पानी का प्यासा कोई व्यक्ति, कोई जिसे भोजन की ज़रुरत है, कोई जिसे चिकित्सा की ज़रुरत है, कोई जिसे प्रार्थना या सलाह की ज़रुरत है, या कि कोई

थका–मांदा मिशनरी जो सोफे पर आराम करके परिवार के साथ घर का बना भोजन करना चाहता है। गोद लेने को बच्चों से जुड़ी कानूनी प्रक्रिया में सीमित न रखते हुए लोगों को अपने परिवार में शामिल किए जाने का विस्तार देने से मैं खुश हूँ।

इसका बेहतरीन उदाहरण एक व्यक्ति है, जो इस समय हमारे साथ रहता है। उसका नाम मैकरीरी है। मेरे विचार से मुझे पहले यह बात देना चाहिए कि एक साल पहले हम नए मकान में गए हैं, और जिस घर में अभी हम गए हैं उसके पिछवाड़े में सीमेंट का एक ब्लॉक है। इसमें चार छोटे–छोटे कमरे हैं.....बस अलमारी के आकार जितने बड़े, सीमेंट के चार चौखट्टे। तो, मैंने सोचा, ''यह क्या है? घर के पिछवाड़े में भी भला ऐसा कुछ होता है?'' मैंने सोचा कि हम शायद उसमें अपने सामान को रखेंगे, लेकिन हमारे पास तो रखने के लिए कोई अधिक सामान ही नहीं है कि हमें किसी स्टोर की ज़रुरत पड़े। निश्चय ही, परमेश्वर ने उसका प्रयोग और लोगों को आश्रय देने में हमारी मदद के लिए किया। पहले भी हमारे साथ ऐसी अकेली महिलाएँ, बूढ़ी महिलाएँ, या ऐसे बच्चे रह चुके थे जिन्हें थोड़े समय के लिए हमारी देखरेख व आश्रय की ज़रुरत थी, लेकिन घर के पिछवाड़े में मौजूद इस छोटे से कमरे ने हमें बेसहारा परिवारों को आश्रय देने में सहायता की है।

मैकरीरी एक आदमी है, और इसलिए उसे घर के पिछवाड़े रहना है। हम समुदाय में रह सकते हैं, और अपने परिवार की जगह को विभाजित कर सकते हैं। कोई छः से आठ महीने पहले, बस्ती के समुदाय ने मैकरीरी का घर फूँक डाला था। वह शराबी किस्म का आदमी था, और समुदाय के लोग उसकी इस लत से बहुत परेशान थे। उसका घर जला दिया गया। उसके पैरों ने भी आग पकड़ ली, जिसमें उसकी दायीं पिंडली लगभग हड्डी तक जल गई। जलने की बात पर आपको शायद गुलाबी रंग के माँस की कल्पना उभरती होगी, लेकिन वह गुलाबी नहीं, काला था। इस तरह, अमेज़ीना के लिए काम करनेवाला सामाजिक कार्यकर्ता उस समय उसी क्षेत्र में था, तो वह उसे मेरे पास ले आया और बोला, ''मुझे यह आदमी मिला है, और मैं नहीं जानता कि इसकी कैसे मदद करनी है?'' मैंने कहा, ''मुझे भी नहीं पता।'' हमने उसके पैर को साफ किया, उस पर पट्टी बाँधी, उसे अस्पताल ले गये, और कहा, ''मैं इसके लिए क्या कर सकती हूँ?'' उन्होंने कहा, ''देखिये, इसे अपनी यह टाँग शायद हमेशा के लिए गँवानी पड़े, लेकिन अगर आप ऐसा होने से बचाना चाहती हैं, तो आपको हर दिन इस टाँग की मरहम पट्टी करनी होगी।'' मैंने सोचा, ''ओह, ठीक है।''

इसलिए, पहले पहल हम उसे अपने घर के पिछवाड़ेवाले कमरे में रखना चाहते थे। लेकिन वह अपनी लत में इतना डूबा हुआ था कि उसे लगता था कि वह शराब से दूर नहीं रह सकता था। इसलिए वह हमेशा मसीसी जाने की कोशिश करता रहता था जहाँ पर उसका कोई घर भी नहीं था, लेकिन शराब की खुराक पीने के लिए वह बाहर सोने को भी तैयार था। हर रोज़, उसे वहाँ से उठवाने के लिए या तो किसी को भेजती, या फिर खुद जाती, उसे अपने घर लाती, उसके पैर को धोती, और उसके घावों पर नई पट्टी बाँधती। कई बार, हम उसे खोजने जाते, लेकिन वह हमें नहीं मिलता। मैं कभी नहीं भूलूँगी कि हमारे सामाजिक कार्यकर्ता ने पूरे चार दिनों के बाद, उस ईस्टर रविवार के दिन उसे खोजा था, और शायद उसके घावों पर पट्टी नहीं बाँधी थी। मैं घर के पिछवाड़े में थी, और जैसे ही वह सामने के गेट से भीतर आया, मुझे सचमुच उसमें से गंध आ रही थी। सारे आँगन में उसके संक्रमण की गंध थी, जिसके बारे में आपमें से अधिकांश लोग शायद सुनना पसंद न करें।

डेविड : मैं सुनने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। कोई बात नहीं, आप आगे कहती जायें।

केटी : माफ कीजिए! ईस्टर के अवसर पर वहाँ समुदाय के लोग मौजूद थे। मैंने तीन सबसे बुजुर्ग लोगों से कहा, ''मैं चाहती हूँ कि रात के भोजन को निपटाने में आप मेरी मदद करें।'' मुझे याद है कि मैं अपने पेट के बल लेट कर, चिमटी से उसके पैर में पड़े कीड़े निकाल रही थी। उस समय मैंने कहा, ''कोई फर्क नहीं पड़ता।'' हमने उसे अपने घर के पिछवाड़े रहने की जगह दे दी, और उसकी शराब की लत छुड़वाने का उपचार करने लगे, और इस बात को लेकर वह बहुत चिड़चिड़ा हो गया था। लेकिन जैसे–जैसे उसमें सुधार होने लगा, वैसे–वैसे पट्टी बाँधने का काम केवल 10 मिनट में होने लगा क्योंकि घाव इतना बड़ा नहीं था, लेकिन जब वह बहुत गहरा था, तब उसे धोने और पट्टी बाँधने की प्रक्रिया 30 मिनट की होती थी। हर दिन, उन 30 मिनटों के दौरान मैकरीरी अपनी कहानी का कोई हिस्सा सुनाता था। पता चला कि वह एक पढ़ा–लिखा आदमी था। वह विश्वविद्यालय में आधे सत्र तक पढ़ा था। वह लगभगी आधे सत्र तक अध्ययन कर चुका था कि उसके परिवार को पता चला कि उसे एचआईवी है, और उसके परिवार ने उसे पूरी तरह से त्याग दिया। इस बात का पता चलने के बाद वे उससे किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे। जब उसके साथ कोई नहीं है, वह शराब पीने लगा, और इस तरह वह शराब के लत में पड़ गया। नशे में वह किसी और ही दुनिया में, मैसीसी की बस्तियों में रहता था, और उसे इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि उसका परिवार कहाँ था; उसका इस दुनिया में कोई नहीं था!

जिस दिन वह अपने जीवन की कहानी का यह वाला अंश सुना रहा था, मेरी दस साल की हेलेन, धूप सेकनेवाले कमरे में बैठी थी, और उससे विशेष स्नेह रखती थी। उसने कहा, ''ओह, हम आपका परिवार बनेंगे,'' और हम उसका परिवार हैं, और वह हमारे परिवार का हिस्सा बन चुका है। मैं वह दिन कभी नहीं भूल पाऊँगी, जब पट्टी बाँधते समय वह बिल्कुल चुपचाप बैठा था। मेरी ओर देख कर वह बोला, ''शायद मेरी कहानियाँ खत्म हो चुकी हैं। आप मुझे कुछ बतायें।'' तब मैंने उसे यीशु की कहानी सुनाई, और बताया कि मेरे जीवन में उसने क्या किया था, मैकरीरी के जीवन से वह क्या चाहता था, और हम सबके लिए उसने क्या किया है, और हम दोनों की आँखों से आँसू बह कर, नीचे फर्श की टाईलों पर गिरने लगे।

मैकरीरी के साथ यीशु को बाँटने के अवसर को लेकर मेरे बच्चे बहुत उत्साहित थे। लगभग हर दिन, गृह–विद्यालय में पढ़ने के बाद, आप एक या सभी बच्चों को घर के पिछवाड़े बाइबल लिए, मैकरीरी को वह सब बाते बताते पाएँगे जो वे यीशु के बारे में जानते हैं। वह बहुत अच्छा दोस्त बन गया है। वह बहुत खुश है। वह रविवार को हमारे साथ कलीसिया आता है। कई बार, जब मुझे रात में देर हो जाती है, तब वह गेट के पास तब तक खड़ा रहता है जब तक कि कोई दरवाज़ा न खोल दे और मैं भीतर न चली जाऊँ। यह तो बस एक उदाहरण है, लेकिन हमारे जीवन में तो बहुत से लोग आते–जाते रहते हैं। यह देखना बहुत ही सुखद होता है कि यदि हम अपने दरवाज़ें खोलें तो परमेश्वर क्या कुछ कर सकता है।

डेविड : तो, केवल लोग ही आपके पास नहीं आते, आप और आपकी बेटियाँ भी उन्हें लेकर आती हैं। आपने कुछेक बार मसीसी का ज़िक्र किया है। हमें ज़रा उस समुदाय के बारे में कुछ बतायें और बतायें कि आप और आपकी बेटियाँ वहाँ पर क्या करती हैं।

केटी : मसीसी अब मेरी मनपसंद जगहों में से है। यह बहुत ही हास्यास्पद बात है क्योंकि शुरु–शुरु में मुझे उस जगह से बहुत डर लगता था। वहाँ पर कारामोजोंग नाम का एक समूह है। वे उत्तरी यूगांडा की जनजाति है, और बेहतर जीवन की तलाश में कुछ लोग शहर में आकर बस गए हैं, लेकिन यूगांडा के दूसरे लोग उन्हें दर–किनार किया हुआ है और वे उन्हें तुच्छ समझते हैं। उन्हें आदिम, हिंसक और गंदा समझा जाता है। उन्हें छोटी बस्तियों में रहने को विवश किया गया है जहाँ उनकी जनजातीय संस्कृति और शहरी जीवन के सबसे बदतर पहलूओं का मेलजोल हो गया है। वहाँ वैश्यावृत्ति करने, शराब बनाने, और कबाड़ से धातु बीनने का काम बहुत होता है। बच्चे भुखमरी का शिकार हो रहे हैं, क्योंकि पारंपरिक रुप से वे अपने जीवनयापन के लिए पशु–पालन करते थे, लेकिन इतनी तंग बस्तियों में पशु रखने का सवाल ही नहीं उठता, इसलिए वे अपने बच्चों को भीख माँगने व कूड़े में से भोजन बीन कर खाने के लिए सड़कों पर भेज देते हैं।

मुझे इस समुदाय का पता उन बच्चों से लगा था जिनसे मेरी दोस्ती हो गई थी। मैं बहुत डर गई थी। ये ऐसे लोग थे जिनसे खुद यूगांडा के लोग भी दोस्ती नहीं करना चाहते थे। इसी लिए वे लोग किसी भी बाहरी व्यक्ति पर भरोसा नहीं करते हैं। किसी ने उनके प्रति कभी दया नहीं दिखाई। एक छोटी सी लड़की के लिए वह बहुत ही भयानक जगह थी, लेकिन धीरे–धीरे मैंने वहाँ पर काम करना शुरु किया, और मुझे पता चला कि पास ही एक स्कूल है जहाँ सरकार ने कारामोजोंग समुदाय के बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध किया था, लेकिन उनके बच्चें वहाँ नहीं जाते थे, क्योंकि वे भूखे थे, और वही उनकी प्राथमिकता थी। सड़क पर जाकर कूड़े में से भोजन तलाशना ही उनकी प्राथमिकता थी। स्कूल जाकर यह काम नहीं किया जा सकता था। मैने सोचा, ''अगर स्कूल में ही भोजन का प्रबंध किया जाये तो क्या पता वे स्कूल में आना शुरु कर दें।'' पहले हम सप्ताह में दो दिन भोजन देते थे, और अब हम सप्ताह में पाँच दिन, मैसीसी के स्कूल में 1800 से अधिक बच्चों को भोजन कराते हैं। हमने बहुत से बच्चों को सड़क की जगह स्कूल में जाते देखा है, क्योंकि स्कूल के अंत में उन्हें भोजन मिलता है। उन्हें अपने समुदाय में अपने माता–पिताओं के साथ रहते देखना बहुत ही सुखद अनुभव है।

जब मैं इनमें से कुछ बच्चों के साथ दोस्ती कर रही थी, मैं उनकी माँओं के साथ मिल रही थी। ये वे महिलायें थीं जो वैश्यावृत्ति, शराब बनाने, और कबाड़ में से धातु बीनने व अन्य ऐसे कामों को कर रही थीं जो उनके व उनके परिवारों के लिए खतरनाक थे। मैने उन्हो हाथों से माला बनाना सिखाया, जिन्हें हम अमेज़ीना में खरीद कर यहाँ संयुक्त राष्ट्र में बेचते हैं। इन ज़ेवरों की सबसे बड़ी बात यह है कि हम उनके पैसे उन महिलाओं को देते हैं, ताकि वे अपने परिवार का भरण–पोषण कर सकें। उसमें से कुछ पैसे वे अपने भविष्य के लिए भी बचा कर रख सकते हैं। इसके बाद, गले की इन मालाओं को अधिक दाम में बेचने के कारण हुए बीच का मुनाफा उसी समुदाय के बच्चों को भोजन कराने के लिए भेजते हैं।

महिलाएँ यह बात जानती हैं और इस बात को लेकर बहुत उत्साह व गर्व महसूस करती हैं। वे न केवल अपने बच्चों के भरण पोषण के लिए जुटाती हैं, बल्कि पूरे समुदाय का भी भरण पोषण करती हैं। वह मेरी मनपसंद जगहों में से एक है। मैं और बच्चियाँ साथ में सेवकाई के लिए वहाँ जाती हैं। मैसीसी का डर पूरी तरह से खत्म हो चुका है। ये लोग हमारे करीबी मित्र बन चुके हैं। मैं अपने तीन साल की बच्ची को भी वहाँ दौड़ने के लिए छोड़ सकती हूँ, और कह सकती हूँ कि ''जाओ, जाकर अपने दोस्त बना लो।'' वह पूरे समुदाय में दौड़ती फिरती है। लोग मुझे और मेरे परिवार को जानते हैं, और हमें कुछ नहीं होने देंगे। इन

लोगों के साथ दोस्ती करना बहुत सुखद अनुभव रहा है। हम उस समुदाय में बाइबल अध्ययन भी करते हैं। मेरे बच्चों को उसमें भी जाना अच्छा लगता है।

डेविड : हम मज़ाक कर रहे थे क्योंकि केटी के साथ उसकी दो बच्चियाँ भी आई हैं, और वह कह रही थी कि कैसे उन्हें फर्श पर खेलते देख, वह सोचती है, ''अरे! नहीं। वहाँ पर तो कीटाणु होंगे,'' जबकि उनके बच्चे उन बस्तियों में खेलते हैं जहाँ तरह–तरह की बीमारियाँ और न जाने कितने तरह के संक्रमण होते हैं!

केटी : जानते हैं, अच्छे मिशनरी अपने बच्चों को घर में पढ़ने के लिए छोड़ते हैं और खुद बस्तियों में सेवकाई के लिए जाते हैं। बेघर बच्चों के साथ खेलने के कारण मेरे बच्चों के चेहरों पर दाद हो गई थी, लेकिन सेवकाई के नाम पर कीटाणुओं को झेलना अलग बात होती है, और फर्श पर लोटने के कारण कीटाणुओं को झेलना अलग बात।

डेविड : ठीक है। तो, पहले घाव में पड़े कीड़े और अब दाद। हमें ज़रा अनाथों और विधवाओं के लिए की जानेवाली सेवकाई को साथ में किये जाने के बारे में बतायें। यह बात हमें वचन में हर जगह दिखाई देती है। बस्ती के इस समुदाय में यह कैसे हुआ?

केटी : बहुत बार ऐसा होता है कि अकेली माँ के साथ रहनेवाला बच्चा भी उतना ही ज़रुरतमंद होता है जितना कि किसी रिश्तेदार के साथ रहनेवाला कोई अनाथ। इतनी सारी विधवाओं के साथ दोस्ती करना, और उन्हें अपने ही समुदाय की मदद करते देखना और अपने बच्चों को उनकी मदद करते देखना बहुत ही सुखद अनुभव होता है।

इसका एक अच्छा उदाहरण है जाजा ग्रेस। वह अधिक आयु की विधवा थी। वास्तव में वह केवल 55 या 60 साल की थी, लेकिन उसे देखने पर शायद आप उसे 80 या 90 साल का समझेंगे। उसके पति की एचआईवी के कारण मौत हो गई थी। उसके बच्चों की भी एचआईवी के कारण मौत हो चुकी थी। उसे लगता था कि शायद एक या दो बच्चे ज़िंदा थे, लेकिन उन्होंने उसे पूरी तरह से बेसहारा छोड़ दिया था। उनकी बातचीज का अरसा बीत चुका था। वह समुदाय में पीछे की तरफ एक छोटी सी झोपड़ी में रहती थी। मुझे याद है कि उस जगह में हमेशा सीलन और अंधेरा रहता था। बारिश के समय उसकी छत टपकती थी। वह इतना अधिक कुपोषित थी कि कई सालों से चल भी नहीं पा रही थी। वह देख नहीं

सकती थी। वह वहाँ पर बिल्कुल अकेली थी। मुझे इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं है कि वह आखिर हमारे पहुँचने तक ज़िंदा कैसे बची थी।

मुझे नहीं पता था, लेकिन वह परमेश्वर से प्रार्थना करती थी, ''परमेश्वर, मैं आप पर विश्वास करती हूँ, लेकिन मेरा जीवन इतना दूभर है कि आप पर विश्वास करना बहुत कठिन है। क्या आप मेरी मदद के लिए किसी को भेज सकते हैं? क्या आप किसी को मेरी सहेली बनने के लिए भेज सकते हैं?'' मुझे इस बात की कोई खबर नहीं थी, और मेरे समूह की महिलाओं ने मुझे एक दिन कहा, कि ''हमने सुना है कि समुदाय के किनारे एक ऐसी महिला रहती है, जिसे मदद की बहुत ज़रुरत है। हम उसके घर जाना चाहेंगे। क्या आप उसके पास जाना चाहेंगीं?'' मैं, मेरे बच्चे और कुछ अन्य लोग वहाँ पहुँचें। मैं जैसे ही उसके घर में पहुँची, उसने कहा, ''परमेश्वर ने तुम्हें मेरे पास भेजा है!'' मैने कहा, ''बहुत बढ़िया है।'' और इस तरह हमारी दोस्ती की शुरुआत हो गई।

हम उसे अस्पताल ले गये जहाँ हमें पता चला कि उसे एचआईवी और तपेदिक है। मेरी शुरुआती प्रतिक्रिया थी, ''ठीक है, तो हम इसे अपने साथ ले जाएँगे।'' लेकिन वह जाना नहीं चाहती थी। वह बहुत बूढ़ी थी और अपने ही घर में रहना चाहती थी। माला बनानेवाली 20 महिलाओं के बाइबल अध्ययन दल से मैने पूछा, ''यदि मैं भोजन पका कर लाती हूँ, तो क्या तुम उस महिला को खोज लाओगे?'' वे सब उस महिला की मदद करने को उत्सुक थीं! मैं उसके लिए सूखा भोजन, साबुन, और दवाओं के कुछ पैकेट ले आती। उन महिलाओं में से दो या तीन जाकर उसके लिए भोजन पकातीं, उसके कपड़े धोतीं, और सुनिश्चित करती कि उसने दवाइयाँ खाई हैं।

मेरे विचार से,''वाह, अगर पड़ोसी की मददे से बेहतर कोई बात है, तो वह है पड़ोसी को उनके पड़ोसी की मदद करने के योग्य बनाना।'' उस बूढ़ी महिला की सेवा करने के लिए हम सभी महिलाओं का साथ में आना एक सुखद अनुभव था। भोजन में विटामिनों का पोषण भर पाने से उसकी आँखों की ज्योति धीरे–धीरे लौटने लगी। क्रिसमस के दिन, हम कलीसिया गए थे, और उसके बाद हम उस महिला के पास कलीसिया को ले गये और उसके साथ भोजन किया। सालों बाद अब वह अपने पैरों पर फिर से खड़ी होने और अपने घर के आसपास चलने लगी थी। उसके जीवन में परमेश्वर को सामर्थ्य भरते देखना और उसके जीवन का उद्धार करते देखना एक सुखद अनुभव था। कई महीनों बाद, यह दिखने लगा था कि वह अपने जीवन के अंतिम छोर पर पहुँच चुकी थी। उसके जाने का, और यीशु मसीह के साथ अपने घर लौटने का समय हो चुका था। वह उसके लिए तैयार थी। वह तैयार थी।

हमने सोचा था कि हम उसे अपने घर में ले आएंगे। उसका तपेदिक बहुत अधिक संक्रमणवाला था और बहुत ही संक्रामक अवस्था में था, इसलिए हमने उसके लिए एक छोटा सा घर पास ही में ले लिया, और उसे वहाँ ले आये। मेरे बच्चे उस समय तक नियमित पब्लिक स्कूल में जाते थे। वे स्कूल से घर आते, भीतर की ओर भाग जाते और दंत चिकित्सकों वाला मास्क लगा लेते। हमें बताया गया था कि हम उसके पास तो जा सकते थे लेकिन दस फुट की दूरी पर। हमारे परिवार के साथ यह संभव नहीं था, इसलिए हम अपने लिए मास्क ले आये। वे इतने उत्साहित थे, कि वे दौड़ कर उसके घर चले जाते और उसके साथ समय बिताते व कहानियाँ सुनाते। उसकी मृत्यु के समय तक हमने उसे अस्पताल में दाखिल कर दिया था, और उसकी मौत से पहले, हम अस्पताल में कुछ दिन उनके साथ बिता पाए थे। वह अपने घर जाकर यीशु से मिलने को उत्सुक थी। मैं उसे लेकर बहुत उत्साहित थी। हम उसे बहुत याद करते हैं, लेकिन वह जहाँ पर हैं, मैं उसके लिए धन्यवादित हूँ। यह बहुत साल पहले की बात है, लेकिन वह उन पहले लोगों में से हैं जिन्होंने हमारे जीवन को केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि बाकी लोगों के लिए भी खोला।

डेविड : क्या केटी के जीवन में कोई औसत दिन भी होता है? यदि हम आपकी जगह पर होते, तो हमें किन बातों के लिए तैयार रहना पड़ता? आपके जीवन का दिन कैसा होता है?

केटी : यह बहुत तरह का हो सकता है। यदि किसी दिन गाँव में जाकर सेवकाई न करनी हो, तो उस दिन मैं उठ कर बहुत सारी कॉफी पीती हूँ। यहाँ की इस यात्रा का भी यही ध्येय है : बहुत सारी कॉफी पीना। हम नाश्ता करते हैं। हर दिन हम बस वही करते हैं। हम मूँगली के मक्खन के साथ ब्रेड खाते हैं। इसके बाद हम सब सोफे पर बैठ जाते हैं और मिल कर बाइबल अध्ययन करते हैं। इतिहास के लिए, हम एक अलग तीसरे विश्व का अध्ययन करते हैं; अकसर ऐसा विश्व, जिस पर मसीहत का कोई प्रभाव नहीं है। हम उस देश के लिए प्रार्थना करते हैं और पूरा सप्ताह पढ़ते रहते हैं। इसके बाद, हम गणित और स्पेलिंग के चार समूहों में बट जाते हैं। चाहे जो कुछ भी क्यों न चल रहा हो, मेरे बच्चे जानते हैं कि कोई न कोई ऐसा व्यक्ति आएगा जिसे मदद की ज़रुरत होगी। मुझे तब सब कुछ रोक कर उसकी मदद के लिए जाना होगा। वे अपने आप को स्थिति के अनुसार ढाल लेते हैं और अपने काम में लगे रहते हैं। कई बार, वे सिर ऊपर उठा कर पूछते हैं, ''मम्मी क्या आप ठीक हैं? क्या आपको मदद चाहिए? हम अब भी अपना काम कर रहे हैं।''

डेविड : जैसे कि, कुछ ज़रुरी काम में मदद करना। आपने बताया था कि कई बार पानी पीना या प्रार्थना करना चाहते हैं, लेकिन कई बार लोगों को आईवी की ज़रुरत होती है। ऐसे में आपके बच्चे क्या करते हैं?

केटी : वे दौड़ कर आईवी ले आते हैं।

डेविड : वे आईवी लगाने में आपकी मदद करते हैं! मैं बताना चाहूँगा कि मेरे पाँच और तीन साल के बेटे यह नहीं कर सकते हैं।

केटी : खैर, केवल बड़े बच्चों को ही दवाई की अल्मारी से आईवी लाने की इजाज़त है। हम 13 और 16 साल के बच्चों की बात कर रहे हैं। जब मैं कॉलेज में पढ़ना चाहती थी, तब मैं वाकई में एक नर्स बनना चाहती थी। मैं कुछ आपातकालीन मिशनरी कक्षाएँ ले पाई थी। डॉक्टरों के दल ने आकर हमे क्रैश कोर्स कराया था। हम मैसीसी के लोगों के लिए यूगांडा की पंजीकृत नर्सों के साथ क्लिनिक भी चलाते हैं। मैं अब अपनी कुर्सी पर बैठ कर सब कुछ होते हुए देखती हूँ।

कई महीनों पहले, कोई व्यक्ति किसी महिला को हमारे दरवाज़े पर ले आया था। वह मोटरसाईकिल में पीछे बैठी थी। लानेवाला शायद उस महिला का मित्र था। साफ दिख रहा था कि उसे दौरे पड़ रहे थे। मुझे नहीं पता किस चीज़ के, लेकिन उसकी आँखों की पुतलियाँ घूम गई थीं, और उसे दौरे पड़ रहे थे और मुँह से झाग निकल रहा था। मैंने सोचा, ''मुझे इसे कार में डाल कर अस्पताल ले जाना होगा, लेकिन यदि इसके शरीर में हमने तरल पदार्थ की कमी होने दी, तो अस्पताल पहुँचते–पहुँचते तो यह शायद मर ही जाएगी।'' यह उन पलों में से एक था जब बच्चे अपने–अपने हिसाब से काम कर रहे थे, और मैने कहा, ''प्रोसी, दौड़ कर आईवी के लिए ज़रुरी सारा सामान ले आओ।'' वह आई, और उसके पास एक थैले में सारा सामान था, और असने उस महिला को तैयार किया। मैं कार में कूदी और उसे तुरंत अस्पताल ले गई। आखिकार वह अच्छी हो गई। मेरे विचार से सुबह उसके बारे में बताते समय शायद यह बात बतानी रह गई थी। वह अब अच्छी है!

डेविड : यह अच्छी बात है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है।

केटी : मैं एक घंटे बाद घर लौटी, और मेरे बच्चों ने पूछा, ''माँ, वह महिला कैसी हैं? ओह, हमने गणित का काम खत्म कर लिया है।''

डेविड: जीवन का बस एक दिन। मेरे विचार से बहुत तरह से आप हमें कहानियों को व्यावहारिकता के साथ बताने में मदद कर रही हैं। अपने जीवन के कुछ सबसे बड़े संघर्षों के बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?

केटी : मैं आपको जाजा ग्रेस और मैकरीरी की कहानी बता चुकी हूँ। ये सुखांतवाली कहानियाँ हैं, लेकिन हर कहानी का सुखांत नहीं होता। हमारे घर में एक शराबी माँ रहती थी, और उसमें हमने अपने जीवन के कई–कई घंटे, हमारा परिवार और हमारे संसाधन लगाये। हमें लगा उसमे सुधार हो रहा था, और वह फिर से वही सब करने लगती। हम उसे एक और मौका देते, और फिर सोचते कि उसमें सुधार हो रहा है, और वह फिर से पीने लगती। अंत में हमें उससे कहना पड़ा, ''आप यहाँ पर नहीं रह सकती हैं।'' इससे मेरे परिवार के लिए खतरा बढ़ता जा रहा था। उसे अपने बच्चे को किसी दूसरे परिवार के संरक्षण में देना पड़ा था।

कुछ लोग मुस्लिम के रुप में घर में आते, और मुस्लिम के रुप में ही घर से जाते। कई बार मुझे फल दिखाई देते हैं तो कई बार मैं केवल बीज को बस बो ही पाती हूँ, लेकिन मेरा इस बात पर पूरा भरोसा है कि परमेश्वर परमप्रधान है, और वही उस बीज को अपने तरीके से बढ़ाएगा। मुझमें धैर्य नहीं है, और मैं फल देखना चाहती हूँ। लेकिन निराशा से भरी हर कहानी के लिए, सुखांतवाली कई कहानियाँ हैं। साथ ही, ज़रुरत इतनी बड़ी है कि मेरे बरामदे में आई उस महिला को आईवी लगा कर मैं अस्पताल पहुँचा पाई, और वह बच गई, लेकिन वहीं 10 मिनट की दूरी पर कोई व्यक्ति समय पर चिकित्सा न पाने के कारण मर जाता है। मैं अपने आगे खड़े इस भूखे को खाना खिला सकती हूँ, लेकिन वहीं दस मिनट की दूरी पर एक बच्चे की भूख से मौत हो जाती है। इस बात को समझ पाना बहुत मुश्किल हो जाता है कि उस समय, उस व्यक्ति के लिए परमेश्वर तब भी भला है।

मेरे विचार से, पिछले कुछ सालों के दौरान उसने इस बात की पुष्टि की है कि ''तुम कम में विश्वासयोग्य रहो। जिस व्यक्ति को मैंने तुम्हारे सामने रखा है, तुम उसके प्रति आज्ञा को मानों, और मैं बड़ी बातों के निमित्त विश्वासयोग्य ठहरुँगा।'' हम उन दो या तीन लोगों के प्रति उसकी आज्ञा को मानते हैं जिन्हें उसने, उस दिन, हमारे सामने रखा है, और बाकी लोगों को उसके भरोसे छोड़ दें। वह उसके गुणन में विश्वासयोग्य ठहरा है। मैंने यीशु से प्रेम रखनेवाली 13 लड़कियों को देखा है। मैने मैकरीरी जैसे लोगों को देखा है जो हमारे जीवन मे आते हैं, और यीशु मसीह को जान कर जाते हैं। मैं उन 450 बच्चों को देखती हूँ जो उसे जान रहे हैं। मैं सोचती हूँ कि उनकी पहुँच मेरी पहुँच से कितनी अधिक व्यापक होगी। परमेश्वर

बारंबार मेरे जीवन में इस बात की पुष्टि करता रहा है, कि मुझे छोटी बातों में विश्वासयोग्य रहना ही है, और वह बड़ी बातों में विश्वासयोग्य रहेगा।

डेविड : क्या आपको लगता है कि आप जो कर रही हैं वह विलक्षण है?

केटी : नहीं। मेरे विचार से यह स्वाभाविक बात है। यह तो बस यीशु के साथ हमारे संबंध से उपजता है, और वह प्रेम जो उसने मेरे जीवन में डाला है, यह उसी का उमड़ता बहाव है। लोग सोचते हैं कि मैं जो कर रही हूँ वह एक असाधारण बात है, लेकिन मेरे विचार से ऐसा नहीं होना चाहिए। लोग कहते हैं, ''तुम जो कुछ भी करती हो, उसे क्यों करती हो?'' या ''तुम जो कुछ भी करती हो, उसे कैसे करती हो?'' जो कुछ भी मसीह ने मेरे लिए किया है, उसके प्रकाश में बतायें, मैं यह सब आखिर कैसे न करुँ?

सुसमाचार किस बात के लिए बाध्य करता है.....

हम प्रार्थना कर रहे थे कि केटी डेविस के जीवन में मसीह ने जो कार्य किए हैं, वह कहानी उस कहानी में बदल जाएगी जिसे मसीह आपके जीवन में बुन रहा है। तो, जिस सुसमाचार ने केटी को बचाया था, उसी सुसमाचार ने आपको भी बचाया है। वही आत्मा जो उसके भीतर वास करता है, वही आत्मा आपके भीतर वास करता है। उन्होंने जो कुछ भी अपने जीवन से बताया, उनमें से जो बात मुझे सबसे अच्छी लगी वह थी कि यह कोई एक दिन की बात नहीं है, उन्होंने कहा ''ठीक है, मैं अपने घर में लड़कियों को आश्रय देने जा रही हूँ, और यह कर लो, और वह कर लो, और यह सेवकाई कर लो।'' उन्होंने तो कुछ ऐसा कहा, ''मेरे आगे जो है, मैं उसके प्रति विश्वासयोग्य होकर उनके लिए परमेश्वर का बताया कार्य करुँगी, और मैं उस पर पूरा भरोसा रखूँगी कि वह उसे करेगा।'' क्या हों कि हम परमेश्वर को उसके हर वचन के अनुसार लें? क्योंकि जिस सुसमाचार ने उसे विवश किया है, वही सुसमाचार हमें भी विवश कर रहा है!

अपने जीवन को सरल बनायें।

यह एक प्रमुख पल है। एक पल के लिए मेरे साथ मुड़ें। इसे अपनी कुर्सी पर लायें, क्योंकि जो सुसमाचार केटी डेविस को विवश कर रहा है, वही सुसमाचार हम सभी को भी विवश कर रहा है कि हम अपने जीवन को सरल बनायें। मैं यह नहीं कह रहा कि आपका जीवन बिल्कुल केटी के जीवन की तरह होगा, लेकिन बाइबल ने हमें जीवन की बुनियादी ज़रुरतों में ही संतुष्ट रहने को कहा है। तो, आपको इसके लिए क्या करना है? आपके परिवार को क्या करना है? हम अपने जीवन में फैली इस अस्तव्यस्तता से कैसे छुटकारा

पा सकते हैं जो परमेश्वर की ज़रुरत के प्रति हमें संवेदनहीन बना देती है? हम प्रार्थना करते समय ऐसा नहीं कहते कि ''आज की रोटी हमें दे'' क्योंकि खाने के लिए हमारे पास 12 तरह की रोटियाँ उपलब्ध होती हैं। हम कैसे सोचविचार कर कार्य कर सकते हैं? पौलुस कहता है, कि ''...हमें इन्हीं पर संतोष करना चाहिए।''

अपने दान को बढ़ाओ।

अपने जीवन को सरल बनाओ, और अपने दान को बढ़ाओ। इसलिए, केटी के जीवन और नये नियम में दिए उदाहरणों के आधार पर, मैं तीन प्रश्न पूछता हूँ। मैं आपसे पूछूँगा कि : वह कौन सी चीज़ है जिसे बाँटने की अगुवाई परमेश्वर कर रहा है? आपके पास कपड़ें, भोजन और घर है। परमेश्वर आपसे कौन सी चीज़ बाँटने को कह रहा है? उदार बनो और बाँटने के लिए तैयार रहो। 1 तीमुथियुस 6 का यह आदेश है। वह कौन सी चीज़ है जिसे बेचने की अगुवाई परमेश्वर आपको दे रहा है? लूका 12:33 में, यीशु कहता है, ''अपनी संपत्ति बेचकर दान दे दो।'' वह कौन सी चीज़ है जिसे बेचने या बाँटने की अगुवाई परमेश्वर आपको दे रहा है? परमेश्वर आपको किस चीज़ का बलिदान करने को कह रहा है? यही वह जगह है जहाँ से हम अपनी खुशी के लिए दान करने से बढ़कर कष्ट के साथ दान देने की जगह पर पहुँचते हैं। बलिदानपूर्वक दिया जानेवाला दान यह नहीं पूछता ''मैं अपने लिए कितना बचा सकता हूँ?'' बलिदानपूवर्क दिया जानेवाला दान पूछता है ''मैं कितना दे सकता हूँ, फिर चाहे देना कितना ही कष्टकारी क्यों न हो।'' स्पष्ट है, कि यह बात सभी लोगों के लिए समान नहीं होती।

विधवा की दमड़ी याद है? उसने बाकी सभी की अपेक्षा सबसे कम दिया था, लेकिन तो भी उसने बाकी सभी से कहीं अधिक दिया था। वह बहुत ही उदार और बलिदानपूर्वक दिया गया दान था। किसी के लिए 25 डॉलर का दान भी बलिदानपूर्वक दिया दान होगा, जबकि किसी के लिए एक लाख डॉलर का दान भी बलिदानपूर्वक दिया दान नहीं होगा। सालाना एक करोड़ कमानेवाले के लिए नब्बे लाख डॉलर का दान देकर ऐसा सोचना कोई बलिदानपूर्ण बात नहीं है कि ''मैं तो इस साल अपनी गुज़र केवल दस लाख रुपयों पर ही करुँगा।'' यह बहुत ही चरम उदाहरण है, लेकिन क्या हो अगर हम अपनी इस संस्कृति में बलिदानपूर्ण दान देने लगें? या कि हम इस बात के लिए सचुमच परमेश्वर पर भरोसा रखें और इतना दे कि उससे हमें कष्ट हो?

जाने की सोचें।

अपने जीवन को सरल बनायें, अपने दान को बढ़ायें और जाने की सोचें। इसे आप कई तरीकों से कर सकते हैं। आप स्थानीय रुप से यहाँ जा सकते हैं। चाहे आप इस शहर में रहते हैं या नहीं या किसी दूसरे शहर से यहाँ पर आये हैं। आप जहाँ पर भी रहते हैं, वहाँ के गरीब लोगों के पास जायें। हमारे इस शहर में भी ऐसे समुदाय हैं जिन्हें मदद की बहुत ज़रुरत है। इस तरह इन गरीब समुदायों में न जाने कब–कौन–क्या कर दे?

इसके बाद, ज़रुरतमंद बच्चों के बीच, उनका पालक बनने के कई अवसर हमारे विश्वास के इस परिवार के सामने उपलब्ध हैं। अपनी काउंटी के लिए हम सचमुच बहुत कुछ कर चुके हैं, लेकिन हमारे पड़ोस की कई काउंटियाँ अब भी प्रतीक्षा में हैं। क्या हो, अगर हम कहें कि ''हम अपनी काउंटी के ही नहीं, वरन् पूरे शहर के बच्चों की देखरेख करेंगे?'' परमेश्वर ने हमें पर्याप्त संसाधन दिए हैं। अर्थात् हमारे पास घर, प्रेम, अनुग्रह, और सुसमाचार है। इसके बाद, अपने देश में या विदेशों में लाखों अनाथ बच्चों को गोद लेना।

तो आप वैसा कुछ कर सकते हैं, या फिर दुनिया के किसी देश में जा सकते हैं। अल्प अवधि के लिए जाने के कई अवसर उपलब्ध हैं। मैं यह बात विशेष रुप से इस कलीसिया के लिए कह रहा हूँ। आपने केटी की बातों को सुना ही होगा कि कैसे यूगांडा में की एक छोटी सी यात्रा ने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। ऐसा करने के बहुत सारे अवसर उपलब्ध हैं। आप अल्प अवधि के लिए इसमें शामिल हो सकते हैं। सभी आयु के लोग! हाल ही हम एक 84 साल की वृद्ध महिला के विषय में चर्चा कर रहे थे जो यूगांडा में अल्प अवधिक के लिए सेवा कर रही थी।

अल्प अवधि के बाद नम्बर आता है मध्य अवधि का। हाई स्कूल के विद्यार्थी :कॉलेज में प्रवेश करने से पहले एक यात्रा करें। चलिए ऐसा करते हैं! हमारे आगे सुनहरे अवसर हैं। आप कॉलेज में हैं : मध्यावधि में जाने पर विचार करें: दो सालों में तीन महीनें। इसमें भी बहुत से अवसर हैं। ऐसा गर्मियों या किसी सत्र के दौरान हो सकता है। केवल विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि हमारे सेवा निवृत्त होनेवाले, या हो चुके, भाइयों और बहनों के लिए भी कई अवसर उपलब्ध हैं। मध्यावधि, तब दीर्घावधि की ओर ले कर जाता है। परमेश्वर अगुवाई करे, निश्चय ही वह आपकी किसी स्थान विशेष की ओर अगुवाई करेगा। हो सकता है कि इस तरह की सेवकाई के लिए परमेश्वर हम में से बस कुछेक की ही अगुवाई करे, या फिर हो भी सकता है कि वह हम सभी की अगुवाई इस ओर करे, लेकिन निश्चय ही हम में से कुछ लोग हैं जिन्हें परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा कहेगा, ''मैं चाहता हूँ कि तुम अपना बसेरा कहीं और करो।''

कौन जाने, हमारी आज की विश्वासयोग्यता के कारण परमेश्वर न जाने कल क्या करे। यही वह बात है जो मुझे इतना उत्साहित करती है, और एक कहानी को सुनने के बाद मैंने इसी पल के लिए प्रार्थना की थी कि कैसे एक बहन द्वारा प्रभु के वचन का सशब्द पालन करने पर परमेश्वर ने महान कार्य किये। क्या हो जब कोई व्यक्ति या परिवार मसीह के वचन का पालन करे? जब हम अपने सामने उपलब्ध बातों के विषय परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, या कि हम उसके कहे अनुसार कार्य करते हैं, तब, वह उन्हें लेता है, कई बार बहुत विशाल पैमाने में उन्हें इस तरह या इससे भी महान कहानियों में बदल देता है, और संभव है कि कुछेक शायद दुनिया की दृष्टि में इतनी महान न हो, लेकिन बहुत ही अद्‌भुत रीति से महान रीति से कार्य करता है क्योंकि यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता है। यही वह स्थान है जहाँ सुसमाचार हमें इन बातों के निमित्त विवश करता है। हर किसी के लिए यह अनुभव अलग होता है।

सुसमाचार जो माँग करता है .....

एक कलीसिया के रुप में हम एक दूसरे की सहायता करना चाहते हैं, और सोचते हैं कि हम सबके व्यक्तिगत जीवनों में यह बात कैसे रंग लाएगी, लेकिन भले ही व्यक्तिगत स्तर पर यह सबके लिए अलग–अलग हों, तो भी, सुसमाचार हम सभी से एक ही बात की माँग करता है। मैं ''माँग'' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, और केटी को भी आपने इसी शब्द का प्रयोग करते सुना था। सुनने में यह शब्द थोड़ा ''बलपूर्वक'' कहा गया शब्द लगता है, लेकिन जब आपको इस बात का अहसास होता है कि वह कब्र पर जयवंत राजा है, जिसका सब मसीही जीवनों पर अधिकार है, तो यह शब्द बहुत सहज और स्वाभाविक लगता है। इसका मतलब है कि हम अपने जीवन को दिशा देने के अधिकार को उस पर छोड़ दें। इसलिए, सुसमाचार माँग करता है; इसके अलावा कोई संभावना ही नहीं है। जब हम इस सुसमाचार पर विश्वास करते हैं तब वह हमसे खाली चेक की माँग करता है जिसमें हमारी समस्त संपत्ति, हमारी योजनाएँ, हमारे सारे सपने लिखे हों। सुसमाचार आज ही इस खाली चेक की माँग करता है। कल इसके सपने की बात नहीं, बल्कि आज ही। इसलिए मैं आपको इस बात की बुलाहट देना चाहता हूँ कि आप इस कहानी को ''केटी के जीवन में मसीह क्या कर रहा है?'' से बढ़ा कर, ''मेरे जीवन में मसीह क्या करना चाहता है?'' के स्तर तक ले जायें।